

**DR.MALA KUMARI  
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST  
TEACHER)  
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY  
A.N.D COLLEGE SHAHPUR  
PATORY,SAMASTIPUR  
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)  
PAPER-4 ,UNIT-6,  
NEO-FREUDIANS:CONTRIBUTION OF  
KEREN HORNEY  
LECTURE-60**

**कैरेन हार्नी का योगदान (karen horney,1885-1952)**

हार्नी ने यह भी स्पष्ट किया है कि एक स्नायुविकृत व्यक्ति हमेशा निम्नांकित तीन दिशाओं में से किसी एक दिशा में अवश्य ही अपने आप को ले जाता है –

(i) व्यक्तियों की ओर झुकने की प्रवृत्ति (moving towards people)

(ii) व्यक्तियों के विरुद्ध होने की प्रवृत्ति (moving against people)

(iii) व्यक्तियों से दूर हटने की प्रवृत्ति (moving away from people)

हार्नी का मत था

की इन तीनों प्रवृत्तियों से अलग-अलग तीन तरह के व्यक्तित्व की उत्पत्ति होती है जिसका वर्णन निम्नांकित है –

(1) **फरियादी प्रकार** – इस तरह का व्यक्तित्व का सम्बन्ध व्यक्तियों की ओर झुकने की प्रवृत्ति से होता है। ऐसे व्यक्ति जरूरत से ज्यादा दूसरो पर निर्भर करते हैं और दूसरो के स्नेह एवं अनुमोदन को जरूरत से ज्यादा महत्व देते हैं।

(2) **विद्वेष प्रकार** – इस तरह का व्यक्तित्व 'व्यक्तियों के विरुद्ध होने की प्रवृत्ति से सम्बंधित होता है। ऐसे व्यक्ति आक्रामक, शक्की, समाजविरोधी तथा विद्वेष प्रकृति के होते हैं।

(3) **असम्बद्ध प्रकार** – इन तरह का व्यक्तित्व व्यक्तियों से दूर हटने की प्रवृत्ति से सम्बंधित होता है। ऐसे व्यक्तियों में आत्मकेंद्रिता, एकांतप्रियता तथा असामाजिकता अधिक होती है।

3. **चिंता को कम करने के उपाय** – हार्नी का कहना था की मूल दुश्चिंता से प्रत्येक व्यक्ति छुटकारा पाने के लिए कुछ उपायों को अपनाता है। ऐसे उपायों को निम्नांकित दो भागों में बांटा जा सकता है –

(i) **आदर्शवादी आत्म छवि (idealized self-image)** – हारनी के अनुसार मूल दुश्चिंता को दूर करने के ख्याल से अपने आप के

बारे में व्यक्ति एक आदर्शवादी छवि विकसित कर लेता है जिसमें वह अपने आप को सभी तरह के उत्तम गुणों से मुक्त मानता है | यह आदर्शवादी छवी प्रायः अवास्तविक एवं अतिरंजित होता है | अपने आदर्शवादी आत्मन को समर्थन प्रदान करने के लिए व्यक्ति घमंडी हो जाता है जिसमें वह अपने आप में कुछ ऐसी विशेष शक्ति जैसे - बुद्धि , बल या धन प्राप्त कर लेने की बात सोच रखता है जो अन्य किसी में नहीं होता है | (ii)

**रक्षा प्रक्रम (defence mechanism)-** हार्नी का मत है की व्यक्ति मूल दुश्चिंता को दूर करने के लिए कुछ रक्षा प्रक्रम का सहारा लेता है | उनके अनुसार ऐसा रक्षा प्रक्रम दो प्रकार के होते हैं - यौक्तिकीकरण तथा बाह्यता |

अस्पष्ट हुआ की हार्नी सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारको पर बल डाल कर यह दिखलाने की कोशिश किये है की मानव व्यवहार न केवल जैविक एवं मूल प्रवृत्तिक कारकों से ही निर्धारित होता है बल्कि पर्यावरणी कारको से भी प्रभावित होता है |

इन उपलब्धियों के बावजूद कुछ मनोवैज्ञानिकों ने हार्नी के योगदानों की आलोचना किया है जिसमें निम्नांकित बिंदु महत्वपूर्ण है -

(i) लुडिन (1985) ने यह मत जाहिर किया है की यद्दपि हार्नी ने फ्रायड के योगदानो को कुछ विशेष कारक जोड़कर उन्नत बनाने की कोशिश किया है ,फिर भी उनकी उपलब्धियाँ एवं योगदान फ्रायड की उपलब्धियों एवं योगदान के सामने काफी तुच्छ है ।

(ii) कुछ मनोवैज्ञानिकों ने हार्नी के दृष्टिकोण को अधुरा एवं आंशिक करार दिया है ।इन मनोवैज्ञानिकों का मत है की हार्नी मूलतः दुश्चिंता स्नायुविकृत आवश्यकताएं तथा स्नायुविकृत प्रवृत्तियों के अध्ययन तक ही अपने आप को सिमित रखता है ।

इन आलोचनाओं के बावजूद हार्नी के योगदानो को मनोविज्ञान के इतिहास में प्राथमिकता दी गयी है ।उनका मूल दुश्चिंता को संप्रत्यय सबसे अधिक महत्वपूर्ण रहा है ।